

Chapter 2

स्वर्णकाकः

प्रश्न 1.

एकपदेन उत्तरं लिखत-(एक पद में उत्तर लिखिए)

(क) माता काम् आदिश?

(ख) स्वर्णकाकः कान् अखाद?

(ग) प्रासादः कीदृशः वर्तते?

(घ) गृहमागत्य तया का समुद्घाटिता?

(ङ) लोभाविष्टा बालिका कीदृशीं मञ्जूषां नयति?

उत्तराणि :

(क) पुत्रीम्।

(ख) तण्डुलान्।

(ग) स्वर्णमयः।

(घ) मञ्जूषा।

(ङ) बृहत्तमाम्।

(अ) अधोलिखितानां

प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत -

(अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए-)

(क) निर्धनायाः वृद्धायाः दुहिता कीदृशी आसीत्?

(निर्धन वृद्धा की पुत्री कैसी थी?)

उत्तरम् :

निर्धनायाः वृद्धायाः दुहिता विनम्रा मनोहरा च आसीत्।

(निर्धन वृद्धा की पुत्री विनम्र एवं सुन्दर थी।)

(ख) बालिकया पूर्वं कीदृशः काकः न दृष्टः आसीत्?

(बालिका के द्वारा पहले कैसा कौआ नहीं देखा गया था?)

उत्तरम् :

बालिकया पूर्वं स्वर्णकाकः न दृष्टः आसीत्।

(बालिका के द्वारा पहले स्वर्णमय कौवे को नहीं देखा गया था।)

(ग) निर्धनायाः दुहिता मञ्जूषायां कानि अपश्यत्?
(निर्धन स्त्री की पुत्री ने सन्दूक में क्या देखा?)

उत्तरम् :

निर्धनायाः दुहिता मञ्जूषायां महार्हाणि हीरकाणि अपश्यत्।
(निर्धन स्त्री की पुत्री ने सन्दूक में बहुमूल्य हीरे देखे।)

(घ) बालिका किं दृष्ट्वा आश्चर्यचकिता जाता?
(बालिका क्या देखकर आश्चर्यचकित हो गई?)

उत्तरम् :

बालिका स्वर्णमयं प्रासादं दृष्ट्वा आश्चर्यचकिता जाता।
(बालिका स्वर्णमय महल देखकर आश्चर्यचकित हो गई।)

(ङ) गर्विता बालिका कीदृशं सोपानम् अयाचत् कीदृशं च प्राप्नोत्?
(घमण्डी बालिका ने कैसी सीढ़ी माँगी और कैसी प्राप्त की?)

उत्तरम् :

गर्विता बालिका स्वर्णसोपानम् अयाचत् परं ताम्रमयं प्राप्नोत्।
(घमण्डी बालिका ने सोने की सीढ़ी माँगी किन्तु ताँबे की प्राप्त की।)

प्रश्न 2.

(क) अधोलिखितानां शब्दानां विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत।

उत्तरम् :

शब्द विलोमपद

- (i) पश्चात् - पूर्वम्
- (ii) हसितुम् - रोदितुम्
- (iii) अधः - उपरि
- (iv) श्वेतः - कृष्णः
- (v) सूर्यास्तः - सूर्योदयः
- (vi) सुप्तः - प्रबुद्धः

(ख) सन्धिं कुरुत।

उत्तरम् :

पद सन्धिः

- (i) नि + अवसत् - न्यवसत्
- (ii) सूर्य + उदयः - सूर्योदयः

- (iii) वृक्षस्य + उपरि - वृक्षस्योपरि
- (iv) हि + अकारयत् - ह्यकारयत्
- (v) च + एकाकिनी - चैकाकिनी
- (vi) इति + उक्त्वा - इत्युक्त्वा
- (vii) प्रति + अवदत् - प्रत्यवदत्
- (viii) प्र + उक्तम् - प्रोक्तम्
- (ix) अत्र + एव - अत्रैव
- (x) तत्र + उपस्थिता - तत्रोपस्थिता
- (xi) यथा + इच्छम्

प्रश्न 3.

स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

(क) ग्रामे निर्धना स्त्री अवसत्।

उत्तरम् :

ग्रामे का अवसत्?

(ख) स्वर्णकाकं निवारयन्ती बालिका प्रार्थयत्।

उत्तरम् :

कं निवारयन्ती बालिका प्रार्थयत्?

(ग) सूर्योदयात् पूर्वमेव बालिका तत्रोपस्थिता।

उत्तरम् :

कस्मात् पूर्वमेव बालिका तत्रोपस्थिता?

(घ) बालिका निर्धनमातुः दुहिता आसीत्।

उत्तरम् :

बालिका कस्याः दुहिता आसीत्?

(ङ) लुब्धा वृद्धा स्वर्णकाकस्य रहस्यमभिज्ञातवती।

उत्तरम् :

लुब्धा वृद्धा कस्य रहस्यमभिज्ञातवती?

प्रश्न 4.

प्रकृति-प्रत्यय-संयोगं कुरुत (पाठात् चित्वा वा लिखत)।

उत्तरम् :

- (क) वि + लोक् + ल्यप् - विलोक्य
- (ख) नि + क्षिप् + ल्यप् - निक्षिप्य
- (ग) आ + गम् + ल्यप् - आगत्य
- (घ) दृश् + क्त्वा - दृष्ट्वा
- (ङ) शी + क्त्वा - शयित्वा
- (च) लघु + तमप्

लघुतमम्/लघुतमः
यथेच्छम्

प्रश्न 5.

प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत।

- (क) रोदितुम् -
- (ख) दृष्ट्वा -
- (ग) विलोक्य -
- (घ) निक्षिप्य -
- (ङ) आगत्य -
- (च) शयित्वा -
- (छ) लघुतमम् -

उत्तरम् :

पद प्रकृति-प्रत्यय

- (क) रोदितुम् - रुद् + तुमुन्
- (ख) दृष्ट्वा - दृश् + क्त्वा
- (ग) विलोक्य - वि + लोक् + ल्यप्
- (घ) निक्षिप्य - नि + क्षिप् + ल्यप्
- (ङ) आगत्य - आ + गम् + ल्यप्
- (च) शयित्वा - शी + क्त्वा
- (छ) लघुतमम् - लघु + तमप्

प्रश्न 6.

अधोलिखितानि कथनानि कः/का, कं/काम् च कथयति -

कथनानि	कः/का	कं/काम्
(क) पूर्वं प्रातराशः क्रियताम्
(ख) सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष
(ग) तण्डुलान् मा भक्षय
(घ) अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि
(ङ) भो नीचकाक ! अहमागता,
उत्तरम् :		
कथनानि	कः/का	कं/काम्
(क) पूर्वं प्रातराशः क्रियताम्	स्वर्णकाकः	बालिकाम्
(ख) सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष	वृद्धा	बालिकाम्
(ग) तण्डुलान् मा भक्षय	बालिका	स्वर्णकाकम्
(घ) अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि	स्वर्णकाकः	बालिकाम्
(ङ) भो नीचकाक ! अहमागता,	लुब्धाबालिका	स्वर्णकाकम्

प्रश्न 7.

उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकगतेषु पदेषु पञ्चमीविभक्तेः प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -
यथा- मूषकः बिलाद् बहिः निर्गच्छति। (बिल)

- (क) जनः बहिः आगच्छति। (ग्राम)
 (ख) नद्यः निस्सरन्ति। (पर्वत)
 (ग) पत्राणि पतन्ति। (वृक्ष)
 (घ) बालकः विभेति। (सिंह)
 (ङ) ईश्वरः त्रायते। (क्लेश)
 (च) प्रभुः भक्तं निवारयति। (पाप)

उत्तरम् :

- (क) जनः ग्रामाद् बहिः आगच्छति।
 (ख) नद्यः पर्वतेभ्यः निस्सरन्ति।
 (ग) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
 (घ) बालकः सिंहाद् विभेति।
 (ङ) ईश्वरः क्लेशात् त्रायते।
 (च) प्रभुः भक्तं पापात् निवारयति।

4MARKS

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

प्रश्न 1.

"ग्रामे निर्धना वृद्धा स्त्री न्यवसत्।"

उपर्युक्तवाक्ये रिक्तस्थाने पुरणीयसंख्यावाचीपदमस्ति -

(अ) एकः

(ब) एका

(स) एकस्य

(द) एकाम्

उत्तरम् :

(ब) एका

प्रश्न 2.

"सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष।"

उपर्युक्तवाक्ये रेखांकितक्रियापदे लकार : वर्तते -

(अ) लटलकारः

(ब) लटलकारः

(स) लङ्लकारः

(द) लोटलकारः

उत्तरम् :

(द) लोटलकारः

प्रश्न 3.

"अहं..... तण्डुलमूल्यं दास्यामि।"

अस्मिन् वाक्ये रिक्तस्थाने समुचितं पदं।

किम्

(अ) तुभ्यम्

(ब) त्वाम्

(स) त्वम्

(द) तवं

उत्तरम् :

(अ) तुभ्यम्

प्रश्न 4.

"..... शीघ्रमेव स्वगृहं गच्छ।"

उपर्युक्तवाक्ये पूरणीयं कर्तृपदं किम्?

(अ) अहम्

(ब) सा

(स) त्वम्

(द) वयम्

उत्तरम् :

(स) त्वम्

प्रश्न 5.

"यदा काकः शयित्वा प्रबुद्धः"..... इत्यत्र कर्तृपदं वर्तते

(अ) यदा

(ब) काकः

(स) शयित्वा

(द) प्रबुद्धः

उत्तरम् :

(ब) काकः

लघूत्तरात्मक प्रश्न :

(क) संस्कृत में प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

निर्धनवृद्धायाः पुत्री कीदृशी आसीत्?

(निर्धन वृद्धा की पुत्री कैसी थी?)

उत्तर :

सा विनम्रा मनोहरा चासीत्।
(वह विनम्र और सुन्दर थी।)

प्रश्न 2.

वृद्धा स्त्री स्वपुत्रीं किमादिदेश?
(वृद्धा स्त्री ने अपनी पुत्री को क्या आदेश दिया?)

उत्तर :

सा आदिदेश यत् - 'सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष।'।
(उसने आदेश दिया कि-'धूप में चावलों की पक्षियों से रक्षा करना।')

प्रश्न 3.

बालिकया कीदृशः काकः पूर्वं न दृष्टः?
(बालिका के द्वारा कैसा कौआ पहले नहीं देखा गया था?)

उत्तर :

बालिकया स्वर्णपक्षो रजतचञ्चुः स्वर्णकाकः पूर्वं न दृष्टः।।
(बालिका ने सोने के पंख वाला एवं चाँदी की चोंच वाला स्वर्णमय कौआ पहले नहीं देखा था।)

प्रश्न 4.

बालिका किम् विलोक्य रोदितुमारब्धा? (बालिका क्या देखकर रोने लगी?)

उत्तर :

बालिका स्वर्णकाकं तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य रोदितुमारब्धा।
(बालिका स्वर्ण कौए को चावल खाता हुआ और हँसता हुआ देखकर रोने लगी।)

प्रश्न 5.

स्वर्णकानेन बालिकायाः कृते कस्यां भोजनं पर्यवेष्टितम्?
(स्वर्ण-कौए ने बालिका के लिए किसमें भोजन परोसा?)

उत्तर :
तेन स्वर्णस्थाल्यां भोजनं पर्यवेष्टितम्।
(उसने सोने की थाली में भोजन परोसा।)

प्रश्न 6.
निर्धनबालिका मञ्जूषायां किं विलोक्य प्रहर्षिता जाता?
(निर्धन बालिका सन्दूक में क्या देखकर प्रसन्न हो गई?)

उत्तर :
सा मञ्जूषायां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य प्रहर्षिता जाता।
(वह सन्दूक में बहुमूल्य हीरे देखकर प्रसन्न हो गई।)

प्रश्न 7.
ईयंया लुब्धा वृद्धा किम् अभिज्ञातवती? (ईर्ष्या से लोभी वृद्धा क्या जान गई?)

उत्तर :
ईर्ष्याया लब्धा वृद्धा स्वर्णकाकस्य रहस्यमभिज्ञातवती।
(ईर्ष्या से लोभी वृद्धा स्वर्ण-कौए के रहस्य को जान गई।)

प्रश्न 8.
स्वर्णकाकः लुब्धां बालिका कीदृशे भाजने भोजनम् अकारयत्?
(स्वर्ण-कौए ने लोभी बालिका को कैसे पात्र में भोजन कराया?)

उत्तर :
स्वर्णकाकः तां ताम्रभाजने भोजनम् अकारयत्।
(स्वर्ण-कौए ने उसे ताँबे के पात्र में भोजन कराया।)

प्रश्न 9.
लोभाविष्टा बालिका कां मञ्जूषां गृहीतवती?
(लोभी बालिका ने कौनसी सन्दूक ग्रहण की?)

उत्तर :

सा बृहत्तमां मञ्जूषां गृहीतवती।
(उसने सबसे बड़ी सन्दूक ग्रहण की।)

प्रश्न 10.

लब्धया बालिकया कस्य फलं प्राप्तम्?
(लोभी बालिका को किसका फल प्राप्त हुआ?)

उत्तर :

लुब्धया बालिकया लोभस्य फलं प्राप्तम्।
(लोभी बालिका को लोभ का फल प्राप्त हुआ।)

7MARKS

प्रश्न 1.

अधोलिखितवाक्येषु कालाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्न निर्माणं कुरुत

1. कस्मिंश्चिद् ग्रामे एका निर्धना स्त्री न्यवसत्।
2. तस्याः दुहिता विनम्रा मनोहरा च आसीत्।
3. सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष।
4. एको विचित्रः काकः समुड्डीय तामुपजगाम।
5. एतादृशः स्वर्णकाकः तया पूर्वं न दृष्टः।
6. तण्डुलान् खादन्तं काकं विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा।
7. अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि।।
8. सूर्योदयात्प्राक् त्वया पिप्पलक्ष्मण आगन्तव्यम्।
9. प्रहर्षिता बालिका निद्राम् अपि न लेभे।
10. वृक्षस्योपरि स्वर्णमयः प्रसादो वर्तते।
11. सा बालिका स्वर्णसोपानेन स्वर्णभवनमाससाद।
12. भवने चित्रविचित्रवस्तानि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता।
13. स्वर्णकाकेन स्वर्णस्थाल्यां भोजनं परिवेषितम्।
14. त्वं शीघ्रमेव स्वगृहं गच्छ।
15. काकः कक्षाभ्यन्तरात् तिस्रः मञ्जूषाः निस्सारयति।
16. गृहम् आगत्य तया मञ्जूषा समुद्घाटिता।
17. तस्यां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य सा प्रहर्षिता जाता।
18. ईर्ष्या सा स्वर्णकाकस्य रहस्यमभिज्ञातवती।
19. स्वर्णकाकस्तत्कृते ताम्रमयं सोपानमेव प्रायच्छत्।
20. लुब्धया बालिकया लोभस्य फलं प्राप्तम्।

उत्तर :

प्रश्न-निर्माणम्

1. कुत्र एका निर्धना स्त्री न्यवसत्?
2. तस्याः दुहिता कीदृशी आसीत्?
3. सूर्यातपे कान् खगेभ्यो रक्ष?
4. कः समुड्डीय तामुपजगाम?
5. कीदृशः काकः तया पूर्वं न दृष्टः?
6. किम् विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा?
7. अहं तुभ्यं किम् दास्यामि?

8. सूर्योदयात्प्राक् त्वया कुत्र आगन्तव्यम्?
9. प्रहर्षिता बालिका काम् अपि न लेभे?
10. कुत्र स्वर्णमयः प्रसादो वर्तते?
11. सा बालिका केन स्वर्णभवनमाससाद?
12. भवने कानि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता?
13. स्वर्णकाकेन कस्याम् भोजनं परिवेषितम्?
14. त्वं शीघ्रमेव कुत्र गच्छ?
15. काकः कक्षाभ्यन्तरात् कति मञ्जूषाः निस्सारयति?
16. कुत्र आगत्य तया मञ्जूषा समुद्घाटिता?
17. तस्यां कानि विलोक्य सा प्रहर्षिता जाता?
18. ईर्ष्या सा कस्य रहस्यमभिज्ञातवती?
19. स्वर्णकाकस्तत्कृते कीदृशं सोपानमेव प्रायच्छत् ?
20. कया लोभस्य फलं प्राप्तम्?

(ग) कथाक्रम-संयोजनम्

प्रश्न 1.

अधोलिखितक्रमरहितवाक्यानां कथाक्रमानुसारेण संयोजनं कुरुत

1. लोभाविष्टा सा बृहत्तमा मञ्जूषां गृहीतवती।
2. नैतादृक् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती।
3. भो नीचकाक! मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ।
4. मञ्जूषायां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य बालिका प्रहर्षिता जाता।
5. तदनन्तरं सा लोभं पर्यत्यजत्।
6. ताम्रस्थाल्यामेवाहं निर्धना भोजनं करिष्यामि।
7. भवने चित्रविचित्रवस्तूनि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता।
8. प्रहर्षिता बालिका निद्रामपि न लेभे।

उत्तर :

वाक्य-संयोजनम्

1. प्रहर्षिता बालिका निद्रामपि न लेभे।
2. भवने चित्रविचित्रवस्तूनि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता।
3. ताम्रस्थाल्यामेवाहं निर्धना भोजनं करिष्यामि।

4. नैतादृक् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती।
5. मञ्जूषायां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य बालिका प्रहर्षिता जाता।
6. भो नीचकाक! मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ।
7. लोभाविष्टा सा बृहत्तमा मञ्जूषां गृहीतवती।
8. तदनन्तरं सा लोभं परित्यजत्।

प्रश्न 2.

निम्नलिखितक्रमरहित वाक्यानां क्रमपूर्वकं संयोजनं कुरुत-

1. स्वर्णकाकः तत्कृते ताम्रमयं सोपानमेव प्रायच्छत्।
2. लुब्धया बालिकया लोभस्य फलं प्राप्तम्।
3. अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि।
4. तस्यां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य सा प्रहर्षिता धनिका च सञ्जाता।
5. लोभाविष्टा सा बृहत्तमा मञ्जूषां गृहीतवती, तस्यां च सर्पः विलोकितः।
6. तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा।
7. लघुतमा मञ्जूषां प्रगृह्य बालिका गृहं गता।
8. नैतादृक् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती।

उत्तर :

क्रमपूर्वकं वाक्य-संयोजनम्

1. तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा।
2. अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि।
3. नैतादृक् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती।
4. लघुतमा मञ्जूषां प्रगृह्य बालिका गृहं गता।
5. तस्यां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य सा प्रहर्षिता धनिका च सञ्जाता।
6. स्वर्णकाकः तत्कृते ताम्रमयं सोपानमेव प्रायच्छत्।
7. लोभाविष्टा सा बृहत्तमा मञ्जूषां गृहीतवती, तस्यां च सर्पः विलोकितः।
8. लुब्धया बालिकया लोभस्य फलं प्राप्तम्।

प्रश्न 1.

अधोलिखितक्रमरहितवाक्यानां कथाक्रमानुसारेण संयोजनं कुरुत

1. लोभाविष्टा सा बृहत्तमा मञ्जूषां गृहीतवती।
2. नैतादृक् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती।
3. भो नीचकाक! मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ।
4. मञ्जूषायां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य बालिका प्रहर्षिता जाता।
5. तदनन्तरं सा लोभं पर्यत्यजत्।
6. ताम्रस्थाल्यामेवाहं निर्धना भोजनं करिष्यामि।
7. भवने चित्रविचित्रवस्तूनि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता।
8. प्रहर्षिता बालिका निद्रामपि न लेभे।

उत्तर :

वाक्य-संयोजनम्

1. प्रहर्षिता बालिका निद्रामपि न लेभे।
2. भवने चित्रविचित्रवस्तूनि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता।
3. ताम्रस्थाल्यामेवाहं निर्धना भोजनं करिष्यामि।
4. नैतादृक् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती।
5. मञ्जूषायां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य बालिका प्रहर्षिता जाता।
6. भो नीचकाक! मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ।
7. लोभाविष्टा सा बृहत्तमा मञ्जूषां गृहीतवती।
8. तदनन्तरं सा लोभं पर्यत्यजत्।

प्रश्न 2.

निम्नलिखितक्रमरहित वाक्यानां क्रमपूर्वकं संयोजनं कुरुत-

1. स्वर्णकाकः तत्कृते ताम्रमयं सोपानमेव प्रायच्छत्।
2. लुब्धया बालिकया लोभस्य फलं प्राप्तम्।
3. अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि।
4. तस्यां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य सा प्रहर्षिता धनिका च सञ्जाता।
5. लोभाविष्टा सा बृहत्तमा मञ्जूषां गृहीतवती, तस्यां च सर्पः विलोकितः।
6. तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा।
7. लघुतमा मञ्जूषां प्रगृह्य बालिका गृहं गता।
8. नैतादृक् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती।

उत्तर :

क्रमपूर्वकं वाक्य-संयोजनम्

1. तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा।
2. अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि।
3. नैतादृक् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती।
4. लघुतमा मञ्जूषां प्रगृह्य बालिका गृहं गता।
5. तस्यां महार्हाणि होरकाणि विलोक्य सा प्रहर्षिता धनिका च सञ्जाता।
6. स्वर्णकाकः तत्कृते ताम्रमयं सोपानमेव प्रायच्छत्।
7. लोभाविष्टा सा बहत्तमां मञ्जूषां गृहीतवती, तस्यां च सर्पः विलोकितः।
8. लुब्धया बालिकया लोभस्य फलं प्राप्तम्।

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

प्रश्न 1.

"ग्रामे निर्धना वृद्धा स्त्री न्यवसत्।"

उपर्युक्तवाक्ये रिक्तस्थाने पुरणीयसंख्यावाचीपदमस्ति -

(अ) एकः

(ब) एका

(स) एकस्य

(द) एकाम्

उत्तरम् :

(ब) एका

प्रश्न 2.

"सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष।"

उपर्युक्तवाक्ये रेखांकितक्रियापदे लकार : वर्तते -

(अ) लटलकारः

(ब) लटलकारः

(स) लङ्लकारः

(द) लोटलकारः

उत्तरम् :

(द) लोटलकारः

प्रश्न 3.

"अहं..... तण्डुलमूल्यं दास्यामि।"

अस्मिन् वाक्ये रिक्तस्थाने समुचितं पदं।

किम्

(अ) तुभ्यम्

(ब) त्वाम्

(स) त्वम्

(द) तवं

उत्तरम् :

(अ) तुभ्यम्

प्रश्न 4.

"..... शीघ्रमेव स्वगृहं गच्छ।"

उपर्युक्तवाक्ये पूरणीयं कर्तृपदं किम्?

(अ) अहम्

(ब) सा

(स) त्वम्

(द) वयम्

उत्तरम् :

(स) त्वम्

प्रश्न 5.

"यदा काकः शयित्वा प्रबुद्धः" इत्यत्र कर्तृपदं वर्तते

(अ) यदा

(ब) काकः

(स) शयित्वा

(द) प्रबुद्धः

उत्तरम् :

(ब) काकः

स्वर्णकाक: Summary and Translation in Hindi

पाठ-परिचय - प्रस्तुत पाठ श्री पदमशास्त्री द्वारा रचित 'विश्वकथाशतकम्' नामक कथा-संग्रह से लिया गया है, जिसमें विभिन्न देशों की सौ लोक-कथाओं का संग्रह है। यह बर्मा देश की एक श्रेष्ठ कथा है, जिसमें लोभ और उसके दुष्परिणाम के साथ-साथ त्याग और उसके सुपरिणाम का वर्णन, एक सुनहले पंखों वाले कौवे के माध्यम से किया गया है।

पाठ के गद्यांशों का सप्रसङ्ग हिन्दी अनुवाद एवं संस्कृत-व्याख्या -

1. पुरा कस्मिंश्चिद् ग्रामे एका निर्धना वृद्धा स्त्री न्यवसत्। तस्याश्चैका दुहिता विनम्रा मनोहरा चासीत्। एकदा माता स्थाल्यां तण्डुलान्निक्षिप्य पुत्रीमादिदेश-सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष। किञ्चित्कालादनन्तरम् एको विचित्रः काकः समुड्डीय तस्याः समीपम् आगच्छत्।

कठिन-शब्दार्थ :

- पुरा = प्राचीन समय में (प्राचीनकाले)।
- ग्रामे = गाँव में (वसथे)।
- न्यवसत् = रहती थी (अवसत्)।
- दुहिता = पुत्री (सुता)।
- एकदा = एक बार।
- स्थाल्यां = थाली में (स्थालीपात्रे)।
- तण्डुलान् = चावलों को (अक्षतान्)।
- निक्षिप्य = रखकर (स्थापयित्वा)।
- आदिदेश = आदेश दिया।
- सूर्यातपे = धूप में।
- खगेभ्यः = पक्षियों से (विहगेभ्यः)।
- रक्ष = रक्षा करो।
- किञ्चित्कालादनन्तरम् = कुछ समय बाद।
- काकः = कौवा।
- समुड्डीय = उड़कर (उत्प्लुत्य)।

प्रसङ्ग-प्रस्तुत गद्यांश हमारी संस्कृत की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' (प्रथमो भागः) के 'स्वर्णकाकः' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लोभ रूपी बुराई से दूर रहने की प्रेरणा दी गई है। इस अंश में किसी निर्धन वृद्धा द्वारा अपनी पुत्री को धूप में चावलों की पक्षियों से रक्षा हेतु कहे जाने का एवं वहाँ एक विचित्र कौए के आने का वर्णन किया गया है।

हिन्दी-अनुवाद - पुराने समय में किसी गाँव में एक निर्धन वृद्धा स्त्री रहा करती थी। उसकी एक विनम्र, सुन्दर पुत्री थी। एक दिन माता ने थाली में चावल रखकर पुत्री को आदेश दिया- "पुत्री, सूर्य की धूप में (रखे) चावलों की पक्षियों से रक्षा करना।" कुछ समय बाद एक विचित्र कौवा उड़कर उसके समीप आया। सप्रसङ्ग संस्कृत-व्याख्या

प्रसङ्गः - प्रस्तुतगद्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'शेमुषी' इत्यस्य 'स्वर्णकाकः' इति पाठाद् उद्धृतः। अस्मिन् पाठे लोभत्यागस्य सुपरिणामस्य तथा लोभस्य दुष्परिणामस्य एका कथामाध्यमेन वर्णनं वर्तते। प्रस्तुतांशे निर्धनवृद्धायाः पुत्र्याः तां प्रति च तस्याः मातुः कथनं वर्णितम्।

संस्कृत-व्याख्या - प्राचीनकाले एकस्मिन् ग्रामे काऽपि धनहीना वृद्धा नारी अवसत्। तस्याः वृद्धायाः च एका विनम्रा सुन्दरा च सुता आसीत्। एकस्मिन् दिवसे सा वृद्धा जननी स्थालीपात्रे अक्षतान् धृत्वा स्वसुताम् आज्ञापयति यत्-रवेः घामे अक्षतान् पक्षिभ्यः रक्षां करोतु। किञ्चिद् समयानन्तरम् एकः आश्चर्यजनकः स्वर्णमयः काकः उत्प्लुत्य तस्याः सुतायाः समीपम् आगतवान्।